दिनांक: 11 सितम्बर 2023

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा

इस लेख में "दैनिक करट अफेयर्स" और विषय विवरण "भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा" शामिल है। यह विषय संघ लोक सेवा आयोग के सिविल सेवा परीक्षा के "अंतर्राष्ट्रीय संबंध" अनुभाग में प्रासंगिक है।

प्रीलिम्स के लिए:

- *भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा क्या है?*
- *प्रतिभागी कौन हैं?*

मुख्य परीक्षा के लिए:

- *सामान्य अध्ययन-02: अंतर्राष्ट्रीय संबंध*

सुर्खियों में क्यों?

- नई दिल्ली में जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया घोषणा ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे पर महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा क्या है?

- इस महत्वाकांक्षी परियोजना **का उद्देश्य पश्चिम एशिया के माध्यम से भारत से यूरोप तक एक कनेक्टिविटी कॉरिडोर स्थापित करना** है, जो संभावित रूप से एक विशाल यूरेशियन विस्तार में व्यापार, परिवहन और डिजिटल कनेक्टिविटी में क्रांति ला सकता है।
- यह परियोजना **चीन की बेल्ट एंड रोड पहल के लिए एक वैकल्पिक दृष्टि भी प्रस्तुत करती है।**
- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा **ऐतिहासिक स्पाइस रूट के आधुनिक समय के समकक्ष है।**
- यह **अरब प्रायद्वीप को पार करने वाले एक रेलवे लिंक के निर्माण की** कल्पना करता है, जो तब भारत और यूरोप को जोड़ने वाले शिपिंग मार्गों से जुड़ जाएगा।
- इस गलियारे का उद्देश्य ग्रीन हाइड्रोजन पर ध्यान केंद्रित करते हुए कनेक्टिविटी, व्यापार और ऊर्जा संचरण को बढ़ाना है।

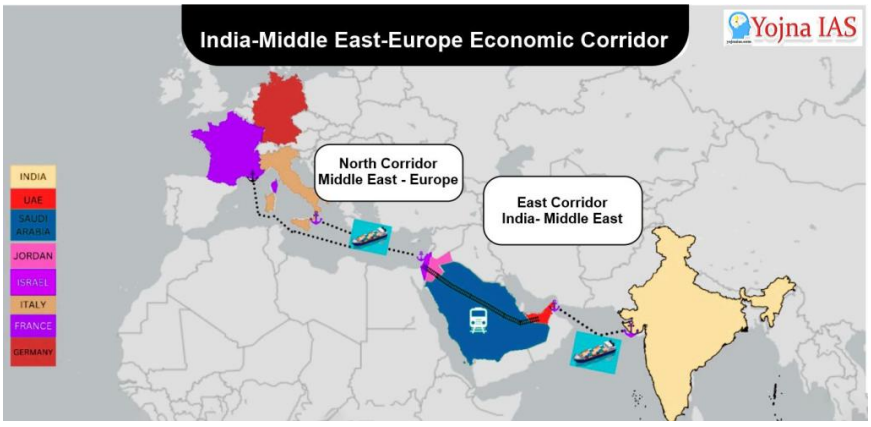

प्रतिभागी कौन हैं?

- इस पहल का नेतृत्व संयुक्त **राज्य अमेरिका और भारत** द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है, जिसमें सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, जॉर्डन, इज़राइल और यूरोपीय संघ **जैसे देशों की प्रमुख भागीदारी होती है।**

- इन देशों ने गलियारे **की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए** हैं, जिसमें आर्थिक एकीकरण, कनेक्टिविटी, रसद, स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन और ऊर्जा संचरण बुनियादी ढांचे पर जोर दिया गया है।

अर्थ

- यह चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का **विकल्प प्रस्तुत करता है और** इसका उद्देश्य एशिया, पश्चिम एशिया / मध्य पूर्व और यूरोप के बीच स्थायी कनेक्टिविटी प्रदान करना है।
- गलियारा **भीड़भाड़ वाली स्वेज नहर को बाईपास** कर सकता है, जो अधिक कुशल परिवहन मार्ग प्रदान करता है।
- इसके अलावा, यह **भारत की मेक** इन इंडिया, सागरमाला और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों के साथ संरेखित है, जो आत्मनिर्भरता और बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देता है।
- यह परियोजना अमेरिका के नेतृत्व वाली पहल पार्टनरशिप फॉर ग्लोबल इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट (पीजीआईआई) के हिस्से **के रूप में** भी उभरी।
- यह उच्च गुणवत्ता वाले बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण के लिए वैश्विक मांग के लिए **एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया का प्रतीक है**, जो संभावित रूप से कई देशों और क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

अतिरिक्त जानकारी

- **आर्थिक गलियारे में दो अलग-अलग गलियारे होते हैं:-**

भारत को पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व से जोड़ने वाला पूर्वी गलियारा
पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व को यूरोप से जोड़ने वाला उत्तरी गलियारा

- इसमें **एक विश्वसनीय और लागत प्रभावी सीमा पार** जहाज-से-रेल पारगमन नेटवर्क स्थापित करने के लिए एक **रेल लाइन शामिल है**, जो दक्षिण पूर्व एशिया से भारत के माध्यम से पश्चिम एशिया / मध्य पूर्व और यूरोप में माल और सेवाओं के ट्रांसशिपमेंट को बढ़ाती है।
- **प्रोफेसर माइकल तंचुम ने 2021 में भारत-अरब-भूमध्यसागरीय मल्टी-मोडल कॉरिडोर का विचार प्रस्तावित** किया, जो आंशिक रूप से वर्तमान परियोजना के साथ संरेखित है।
- यह गलियारा वाणिज्यिक परिवहन की सुविधा प्रदान कर सकता है, भारत की हाइड्रोकार्बन मूल्य श्रृंखला को एकीकृत कर सकता है, और हरित ऊर्जा और प्रौद्योगिकी विनिर्माण के लिए एक नवाचार गलियारा बना सकता है।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा एक परिवर्तनकारी पहल का प्रतिनिधित्व करता है जो क्षेत्रीय और वैश्विक कनेक्टिविटी, व्यापार और आर्थिक विकास को नया रूप दे सकता है। प्रमुख देशों और संगठनों के समर्थन के साथ, इसमें वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में भारत की स्थिति को मजबूत करते हुए मौजूदा व्यापार मार्गों के लिए एक स्थायी और कुशल विकल्प प्रदान करने की क्षमता है।

yojnaias.com

स्रोत: तेल, गैस से माल तक डेटा: भारत से यूरोप तक घोषित समुद्री-रेल गलियारा क्या है? | समझाया गया समाचार – द इंडियन एक्सप्रेस

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न-

प्रश्न-01. भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इस गलियारे की घोषणा जी-20 नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में की गई थी।
2. कॉरिडोर का उद्देश्य बेल्ट एंड रोड पहल के साथ एकीकृत करना है।
3. यह ऐतिहासिक स्पाइस रूट के आधुनिक समकक्ष है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(A)केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (C)

Q2. निम्नलिखित पर विचार करें:

1. संयुक्त राज्य
2. भारत
3. सऊदी अरब
4. मिस्र
5. जॉर्डन
6. ईरान

उपर्युक्त में से कितने देश भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे का हिस्सा हैं?

(A) केवल दो
(B) केवल तीन
(C) केवल चार
(D) केवल पांच

उत्तर: (C)

मुख्य परीक्षा प्रश्न-

प्रश्न-3. क्षेत्रीय और वैश्विक कनेक्टिविटी के संदर्भ में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे के महत्व और संभावित प्रभावों पर चर्चा करें।

Rajiv Pandey

नटराज

इस लेख में "दैनिक करंट अफेयर्स " और विषय विवरण "नटराज" शामिल हैं। यह विषय संघ लोक सेवा आयोग सिविल सेवा परीक्षा के कला और संस्कृति अनुभाग में प्रासंगिक है।

प्रीलिम्स के लिए:

- *जी 20 शिखर सम्मेलन में नटराज की मूर्ति के बारे में?*

मुख्य परीक्षा के लिए:

- *सामान्य अध्ययन-01: कला और संस्कृति*
- *नटराज के बारे में?*

सुर्खियों में क्यों:

- जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन के लिए भरत मंडपम में प्रदर्शित शानदार नटराज मूर्तिकला में भगवान शिव को एक ऐसे रूप में दर्शाया गया है, जो शुरू में 5 वीं शताब्दी ईस्वी में उभरा था, लेकिन महान चोलों के शासनकाल के दौरान प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त किया।

शिल्प कौशल और सामग्री:

- 27 फीट की ऊंचाई पर स्थित नटराज की मूर्ति को सावधानीपूर्वक आठ-धातु मिश्र धातु 'अष्टधातु' से बनाया गया है, जो इसे भगवान शिव के नृत्य रूप में दुनिया के सबसे ऊंचे प्रतिनिधित्वों में से एक बनाता है। इस प्रतिमा का वजन करीब 18 टन है।

पवित्र मंदिरों से मिली प्रेरणा-

थिलाई नटराज मंदिर, चिदंबरम नटराज प्रतिमा का डिजाइन प्रमुख दक्षिण भारतीय मंदिरों में रखी तीन सम्मानित नटराज मूर्तियों से गहरी प्रेरणा लेता है। इन मंदिरों में शामिल हैं:

- चिदंबरम में थिलाई नटराज मंदिर
- कोनेरीराजापुरम में उमा महेश्वर मंदिर
- तंजावुर में बृहदेश्वर (बड़ा) मंदिर, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल

चोल और नटराज:-

- भगवान शिव का नटराज चित्रण चोल वंश के साथ समृद्ध ऐतिहासिक संबंध रखता है, जो 9 वीं से 11 वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान पनपा था। कला और संस्कृति के उदार संरक्षण के लिए प्रसिद्ध चोलों ने विस्तृत शिव मंदिरों के निर्माण के माध्यम से एक स्थायी विरासत छोड़ी, जिसमें प्रतिष्ठित बृहदेश्वर मंदिर एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

चोल कला और संस्कृति-

- **समृद्ध सभ्यता:** अपनी शक्ति की ऊंचाई के दौरान, चोल साम्राज्य दक्षिणी भारत में एक समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध सभ्यता के रूप में पनपा।
- **समृद्ध कला और वास्तुकला:** चोलों ने कला और वास्तुकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो जटिल मूर्तियों और अन्य कलात्मक प्रयासों के निर्माण से चिह्नित था, जिन्होंने इस युग के दौरान एक समृद्ध अवधि का अनुभव किया।

नटराज रूप का विकास-

- **नटराज चित्रण की उत्पत्ति:** भगवान शिव का चित्रण नटराज, या 'नृत्य के भगवान' के रूप में 5 वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास मूर्तिकला कला में उभरना शुरू हुआ।
- **चोल युग आइकनोग्राफी:** यह चोल वंश के शासन के दौरान था कि शिव के नटराज रूप ने प्रतिष्ठित स्थिति हासिल की, खासकर कांस्य मूर्तियों के निर्माण के माध्यम से।

शिव की बहुमुखी पहचान-

- **विविध विशेषताएं:** हिंदू धर्म में एक केंद्रीय देवता शिव, विभिन्न विशेषताओं और भूमिकाओं को शामिल करते हुए एक बहुमुखी पहचान का प्रतीक है।
- **विनाशक और तपस्वी:** उन्हें एक विनाशक के रूप में सम्मानित किया जाता है, जिसे महाकाल के रूप में जाना जाता है, और एक महान तपस्वी के रूप में। इसके अतिरिक्त, वह तपस्वियों के संरक्षक के रूप में कार्य करता है।
- **नटराज – 'नृत्य के भगवान':** नटराज के रूप में, शिव को 'नृत्य के भगवान' के रूप में मनाया जाता है। उन्हें 108 अलग-अलग नृत्यों के निर्माण के साथ जिम्मेदार ठहराया जाता है, जिनमें से प्रत्येक अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं का प्रतीक है।

शिव के नटराज रूप का अवलोकन-

आइकनोग्राफी: नटराज को आमतौर पर चार-सशस्त्र देवता के रूप में दर्शाया जाता है, जो ब्रह्मांड के प्रतीक एक गोलाकार मंच पर नृत्य मुद्रा में स्थित है।

- उनके ऊपरी दाहिने हाथ में डमरू (एक छोटा ड्रम) है, जो सृजन की लय को दर्शाता है।
- ऊपरी बाएं हाथ में आग या लौ होती है, जो विनाश और परिवर्तन का प्रतीक है।
- निचला दाहिना हाथ अभय मुद्रा में स्थित है, जो निर्भयता का प्रतीक है।
- निचला बायां हाथ उठे हुए बाएं पैर की ओर इशारा करता है, जो मुक्ति का प्रतीक है।

लौकिक नृत्य: शिव का नृत्य सृजन, संरक्षण और विनाश (सृष्टि, स्थी और सम्हरा) के ब्रह्मांडीय चक्र का प्रतीक है। यह समय बीतने का भी प्रतीक है, सृजन से विघटन तक, नृत्य की लय ब्रह्मांड के दिल की धड़कन का प्रतिनिधित्व करती है।

अपस्मार: शिव के दाहिने पैर के नीचे, अपस्मार पुरुष या मुयालक नामक एक राक्षस जैसी आकृति अज्ञानता और भ्रम का प्रतिनिधित्व करती है। इस राक्षस को कुचलने का शिव का कार्य अज्ञानता पर ज्ञान और बुद्धि की जीत का प्रतीक है।

तांडव और लस्य: नटराज के नृत्य को दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है: तांडव, विनाश और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, और लास्य, सृजन और अनुग्रह का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्व: नटराज रूप न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति में एक प्रमुख आकृति के रूप में भी कार्य करता है। इसने भरतनाट्यम जैसी कई मूर्तियों, चित्रों और नृत्य रूपों को प्रेरित किया है। भारत के तमिलनाडु में चिदंबरम नटराज मंदिर, भगवान नटराज को समर्पित एक प्रसिद्ध मंदिर है।

- **दार्शनिक व्याख्या:** नटराज के नृत्य को अक्सर अद्वैत (गैरद्वैतवाद) की अवधारणा के प्रतिनिधित्व के रूप में व्याख्या की जाती है, जहां ब्रह्मांड के स्पष्ट द्वंद्व को एक भ्रम माना जाता है, और सब कुछ उसी दिव्य सार की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
- **आध्यात्मिक महत्व:** शिव के भक्त नटराज रूप को अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में मानते हैं, जो उन्हें भौतिक दुनिया की क्षणिक प्रकृति और आंतरिक परिवर्तन और प्राप्ति की आवश्यकता की याद दिलाते हैं।
- **नटराज का प्रतीकवाद:** नटराज का नृत्य सृजन और विनाश, अराजकता और व्यवस्था, जन्म और मृत्यु जैसी विरोधी ताकतों के बीच संतुलन का प्रतीक है। यह जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म के शाश्वत चक्र का प्रतिनिधित्व करता है और जीवन के अंतिम लक्ष्य – जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति (मोक्ष) को दर्शाता है।
- **मोम विधि:** नटराज की मूर्ति का निर्माण पारंपरिक 'लॉस्ट-वैक्स' कास्टिंग विधि का पालन करता है, जो एक प्राचीन तकनीक है जो 6,000 साल से अधिक पुरानी है। इस विधि में एक मोम मॉडल बनाना, इसे एक विशेष मिट्टी के पेस्ट के साथ कवर करना, इसे सुखाना, मोम को पिघलाने के लिए गर्म करना और फिर मूर्तिकला को शिल्प करने के लिए मोल्ड में पिघली हुई धातु डालना शामिल है।
- **कलात्मक विरासत:** नटराज की मूर्ति को तैयार करने के लिए जिम्मेदार मूर्तिकार प्राचीन कलात्मक तकनीकों को संरक्षित करते हुए चोल काल में 34 पीढ़ियों के अपने वंश का पता लगा सकते हैं। इस तरह की एक स्मारक यी प्रतिमा के निर्माण की परियोजना, सात महीने तक चली और लगभग 10 करोड़ रुपये की लागत आई।

स्त्रोत:- नृत्य के भगवान: शिव के नटराज रूप का इतिहास और प्रतीकवाद | समझाया गया समाचार – द इंडियन एक्सप्रेस

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न-

प्रश्न-01 नटराज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नटराज मूर्तिकला मुख्य रूप से चोल वंश से जुड़ी हुई है।
2. नटराज नृत्य जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म के शाश्वत चक्र का प्रतिनिधित्व करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: C

प्रश्न-02 G-20 स्थल पर प्रदर्शित नटराज की प्रतिमा के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. नटराज की मूर्ति कांस्य से बनाई गई है।
2. इस उल्लेखनीय रचना के पीछे राधाकृष्णन स्थापति का हाथ है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: B

मुख्य परीक्षा प्रश्न-

प्रश्न 3–भगवान शिव के नटराज रूप में अंतर्निहित ऐतिहासिक महत्व और धार्मिक प्रतीकवाद का अन्वेषण करें। नटराज मूर्तिकला के विकास को आगे बढ़ाने में चोल वंश द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करें

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com